ओ३म्

पुराणों में क्या है ?

[डा० श्रीराम आर्य]

पुराण शब्द का अर्थ है पुराना। किन्तु वर्तमान में यह शब्द तथाकथित सनातन धर्म के मान्य ग्रन्थ पुराणों के लिए रूढ़ि हो गया है। सनातनी विद्वानों की मान्यता है कि द्वापर में श्रीकृष्ण द्वैपायन [वेदव्यास] जी ने इन पुराण ग्रन्थों की रचना की थी। वेदव्यास जी को विष्णु का अवतार माना जाता है। अतः उनकी दृष्टि में अवतार द्वारा निर्मित होने से पुराणों की मान्यता का महत्व बढ़ जाता है। किन्तु पुराणों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनका रचना काल लगभग दो हजार वर्ष से प्रारम्भ होकर अँग्रेजों के भारत में शासन काल तक चलता रहा है। लगभग सभी पुराणों में जैन व बौद्ध धर्मों का उल्लेख मिलता है जो यह प्रमाणित करता है कि इन मतों का देश में भारी प्रचार हो चुकने के पश्चात् इन ग्रन्थों का निर्माण हुआ था। जैन तीर्थंकर ऋषभदेव तथा बौद्ध धर्म के प्रवर्तक बुद्धजी को इन पुराणों में अवतार की सूची में में गिना गया है। भविष्य पुराण में प्रति सर्ग पर्व खं० ४ अ० १४ में ईसा-मूसा नूर-अकबर-तैमूरलङ्ग-शिवाजी-बाबर-तुलसीदास कबीरदास-रैदास, अँग्रेजों के भारत आगमन, कलकत्ते को राजधानी बनाना व दसवें लार्ड तक का उल्लेख है, परन्तु महात्मा गाँधी भारत की स्वतन्त्रता पाकिस्तान निर्माण, छः सौ रियासतों के विलय आदि का कोई उल्लेख नहीं है। यह इस बात का प्रमाण है कि पुराणों की रचना उन घटनाओं के होने तक होती रही है।

सभी पुराणों पर उनके बनाने वालों के नाम के स्थान पर 'व्यासकृत' शब्द लिखा मिलता है। पुराणों में लिखा गया है—

अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवती सुतः (देवीभागवत १।३।१७)

अर्थात्—अठारह पुराणों को सत्यवती पुत्र व्यासजी ने बनाया है। सारे पौराणिक विद्वानों को हम इस पुराणोक्त दावे का समर्थन करते हुए पाते हैं। विपक्षी विद्वानों से इस विषय पर बहुधा शास्त्रार्थ भी होते रहते हैं किन्तु पुराण का यह दावा पुराणों से ही खण्डित हो जाता है, भविष्य पुराण में प्रश्न किया गया है :—

अष्टादश पुराणानि केन प्रोक्तानि किंफलम् ॥८॥

उत्तर—

पाराशरेण रचितं पुराणं विष्णु दैवतम् ।
शिवेन रचितं स्कान्दं पाद्मं ब्रह्म मुखोद्भवम् ॥१०॥
शुक्रप्रोक्तं भागवतं ब्राह्मं वै ब्रह्मणकृतम् ।
गारुडं हरिणा प्रोक्तं षड्वै सात्विकसम्भवाः ॥११॥
मत्स्यः कूर्मो नृसिंहश्च वामनः शिव एव च ।
वायुरेतत्पुराणानि व्यासेन रचितानिवै ॥ १२ ॥
राजसाः षट् स्मृता वीर कर्मकाण्डमयाभुवि ।
मार्कण्डेयं च वाराहं मार्कण्डेयेन निर्मितम् ॥१२॥
आग्नेयंअङ्गिराश्चैव जनयामास चोत्तमम् ।
लिंग ब्रह्माण्डकेचापि तण्डिना रचिते शुभम् ।
महादेवेन लोकार्थे भविष्यं रचितं पृथम् ॥ १४ ॥
तामसाः षट् स्मृताः प्राज्ञैः शक्तिधर्मपरायणाः ॥१५ ॥

—भविष्य पु० प्रतिसर्ग पर्व खं० ३ अ० २८

अर्थ—प्रश्न है, अठारह पुराणों को किसने बनाया है? उत्तर दिया गया है—विष्णु पुराण पाराशर ने, स्कन्द पु० शिवजी ने, पद्म पु० ब्रह्मा ने, भागवत शुक्राचार्य ने, ब्रह्म पु० ब्रह्मा ने बनाये। यह छः पुराण सात्विक हैं, मत्स्य, कूर्म, नृसिंह, वामन, शिव व वायु ये छः पुराण व्यास कृत व राजस हैं, मार्कण्डेय व बाराह पुराण मार्कण्डेय मुनि ने अग्नि पु० अङ्गिरा ने, लिङ्ग व ब्रह्माण्ड पुराण तण्डि मुनि ने तथा महादेवजी ने भविष्य पुराण बनाये। ये तामस पुराण हैं।

पुराण—कर्त्ताओं की उपरोक्त सूची चाहे सत्य हो या न हो किन्तु इससे

पुराणों का यह दावा कि सभी पुराण व्यास कृत हैं खण्डित हो जाता है।

पुराणों के बनाने वाले अनेक लोग रहे हैं। उन्होंने पुराणों को व्यास के नाम से इसलिए प्रसिद्ध किया है ताकि इन ग्रन्थों की मान्यता में कोई सन्देह न करे।

पुराणों को महर्षि दयानन्द जी महाराज ने विष मिश्रित अन्नवत् त्याज्य घोषित किया है। उसका कारण यह है कि पुराणों में वर्णित स्वर्ग-नरक, भूत देवी देवता, सभी कल्पित हैं। उनकी जो भी कहानियाँ पुराणों में दी हैं सभी अश्लील एवं जनता को बहकाने वाली हैं। पुराणोक्त सारे देवी देवताओं के चरित्र अत्यन्त भ्रष्ट उनमें वर्णित किये गये हैं। शिवजी का दारू वन में जाकर ऋषि पत्नियों को भ्रष्ट करना। (शिव पुराण रुद्र सं० अ० ११) गन्धर्व स्त्रियों से व्यभिचार व पार्वती द्वारा उन औरतों की पिटाई (पद्मपुराण सृष्टि खं० अ० ५८) शिवजी का वेश्यागमन [शिव पु० शतरुद्र सं० अ० २६] आदि तथा विष्णु जी का सती वृन्दा व सती तुलसी से छल करके व्यभिचार [शिव-पु०] दैत्य नारियों से पाताल में जाकर विषय भोग [शिव० पु० शतरुद्र सं० अ० २२ व २३] आदि। ब्रह्मा जी का अपनी पुत्री शतरूपा से दिव्य सहस्र वर्ष पर्यन्त विषय भोग करके मनु को पैदा करना [मत्स्य पु० अ० ३,] इन तीनों ब्रह्मा विष्णु व महादेव का सती अनुसूया से बलात्कार [भविष्य पु० प्रति सर्ग पर्व खं० ४ अ०, १७] इन्द्र का राजा चन्द्र की पुत्री से बलात्कार [ब्रह्मवैवर्त पु० खं० ४अ० १४] आदि वे सर पैर की कथायें पुराणों में दी गई हैं। यहाँ तक कि खुले शब्दों में देवी भागवत पुराण में लिखा है—

इन्द्रोऽग्निश्चन्द्रमा वेधाः परुदाराभिः लम्पटाः।

इन्द्र अग्नि-चन्द्रमा-ब्रह्मा आदि सभी पर नारियों के लम्पट हैं।

श्री कृष्णजी का कुब्जा व राधा से समागम तथा गोपियों से अनुचित सम्बन्ध रास क्रीड़ा की अश्लील कथायें, गोपियों के वस्त्र चुराना व उनके नग्नावस्था में दर्शन, उनसे हँसी मजाक आदि का वर्णन भागवत व ब्रह्म वैवर्त पुराण में दिए हैं। शुकी [तोता] से शुकदेवजी, उल्लू से कणाद मुनि, हिरनी से ऋषि शृङ्ग, रण्डी से वशिष्ठ मुनि, तथा मेंढकी से माण्डव्य मुनि की उत्पत्ति बताकर भविष्य आदि पुराणकारों ने ऋषियों का अपमान किया है।

मृतकों के नाम पर श्राद्ध व उनमें हिरन, मछली, बकरा तथा गाय तक के मांस का विधान किया गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति खं० अ० २ में मनुष्य बलि की आज्ञा दी गई है। पशु बलि देवताओं के सामने देने का तो स्पष्ट विधान पुराणों में दिया गया है। सारे ही देवताओं व सारे आर्य जाति के महान् पूज्य पुरुषों को कलंकित पुराणों ने किया है। इसीलिए ऋषि दयानन्द जी महाराज ने पुराणों को न पढ़ने का आदेश दिया है ताकि पाठकों पर बुरी बातों के संस्कार न पड़ सकें।

पुराणों ने अवतारवाद के मिथ्या सिद्धान्त की कल्पना की है। पुराणों ने ही अवतारों की मखौल भी बनाई है। नृसिंह अवतार को शिवजी के द्वारा कत्ल करा कर उसका सर काट कर खाल उतारे जाने की कथा शिव पुराण व लिङ्ग पुराण पूर्वार्द्ध अ० ६ में दी है। शिव जी ने कूर्म अवतार का दात उखाड़ लिया था। मोहिनी अवतार एक खूबसूरत औरत थी तो हयग्रीव अवतार का धड़ मनुष्य का था और सर घोड़े का था। नारद अवतार सारे जीवन पोस्टमैन [सन्देह वाहक] का काम करता रहा। ऋषभदेव व बुद्ध अवतार बेद धर्म रक्षा को होते हैं। श्री कृष्ण जी, बलराम व व्यास जी तीनों अवतार एक साथ हो गए, और उधर राम व परशुराम अवतार एक साथ पैदा हो गये थे। दोनों परस्पर में लड़ पड़े और एक दूसरे को पहिचान भी न सके थे। श्री कृष्ण जी को विष्णु पुराण अंश ५ अ० १ में नारायण के सर के काले बाल का अवतार बताया गया है। महाभारत पुराण में श्री कृष्ण जी को पार्वती का तथा राधा को शिव जी का अवतार बताया गया है। इस प्रकार पुराणोक्त अवतारवाद का सिद्धान्त भी एक तमाशे की वस्तु बन गया है।

स्वर्ग-नरक देवी देवता वाद की कल्पना भी पुराणों की कोरी गप्प है। देवी भागवत स्कन्द १ अ० १३ श्लोक २० में लिखा है—

स्वर्गस्त्रिविष्टपी मेरुशिखरो परिकल्पितः।
तत्र स्थानं सुरेन्द्रस्य नानारत्न विराजितम्॥

अर्थात् स्वर्ग की कल्पना हिमालय पर्वत पर तिब्बत में की गई है वहाँ का राजा देवराज इन्द्र है और अनेक प्रकार के रत्न वहाँ पर हैं।

केदार कल्प उप-पुराण में हिमालय पर ही ब्रह्मा विष्णु व शिवजी के अमर होने का वर्णन है। तथा महाभारत के अनुसार सारे देवता स्वर्ग-लोक विश्व देवगण, यम आदि सभी हिमालय पर रहते है। वास्तव में शिवजी भूटान के राजा थे। वहाँ के निवासी भूत जाति के कहे जाते थे। भूत से भुटिया या भोटिया बन गया और भूत से भूतनाथ शिवजी कहलाये गए। उनका राज्य मानसरोवर तक था। ऋषि दयानन्द जी ने पूना के १५ व्याख्यानों में इन विद्वानों को आदि सृष्टि में मनुष्य माना है। बाद को इनकी गद्दी पर जो भी बैठा उनके ही नाम से प्रसिद्ध होता रहा। जैसे इङ्गलैण्ड की गद्दी पर बैठने वाले जार्ज या एडवर्ड कहे जाते हैं। पर पुराणकारों ने इनको ईश्वर, पर्वतीय पुरुषों को देवता व वहाँ की स्त्रियों को अप्सरायें या देवियाँ, लिखकर पुराण रूपी उपन्यासों की रचना कर डाली है।

भिन्न भिन्न देवताओं के उपासकों ने अपने-अपने देवताओं के महत्व प्रदर्शनार्थ भिन्न-भिन्न पुराणों को बनाया था। इनमें अपने देवता की प्रशंसा व अन्य देवताओं की निन्दायें लिखी गई हैं। सारे पुराण निन्दा स्तुति से भरे पड़े हैं।

पुराणों को देखने से यह ज्ञात होता है कि उस युग में धार्मिक सिद्धान्त भी विद्वानों में निश्चत नहीं थे। कहीं देवी से जगत बना है। कहीं ब्रह्मा या विष्णु से उत्पति मानी है। कहीं जीव को परमेश्वर का अंश माना है तो कहीं सारे जगत् को ही ईश्वर का प्रतिपादन किया गया है, कहीं स्वर्ग विष्णु लोक कैलाश व नरक को हिमालय पर माना है तो कहीं इनको पृथ्वी से करोड़ों अरबों कोस ऊँचा माना है। सृष्टि उत्पत्ति का क्रम भी भागवतादि पुराणों में उट पटाँग बुद्धि विरुद्ध दिया गया है। कश्यप की स्त्रियों के गर्भ से जल-चर थल-चर, घास-पुस-वृक्ष, सर्प मनुष्य आदि की उत्पत्ति मानी गई है, जो कि सारी की सारी बुद्धि विरुद्ध कल्पनायें हैं।

ईश्वर के सम्बन्ध में पुराणकार जो भी वर्णन कहीं करता है उसे ब्रह्मा विष्णु या महादेव पर घटा देता है देवी भागवत खं० १ अ० ८ में इन तीनों देवों के बारे में लिखा है कि—

अर्थात्—भक्ति से छब्बीस पुराणों को जो पढ़ता व सुनता है वह ... मुक्त हो जाता है।

इससे प्रगट है कभी पुराण २६ भी थे। भविष्य पुराण में लिखा है—

सर्वाण्येव पुराणानि सज्ञेयानि नरर्षभ।
द्वादशैव सहस्त्राणि प्रोक्तानीह मनीषिभिः।१०३।
पुनर्वृद्धिंगतानीह आख्यानैर्विधैर्नृप ।। १०४

—भविष्य पु० ब्राह्म पर्व अ० १

कभी सारे पुराणों में १२००० श्लोक मात्र थे। उनमें उपाख्यान जोड़-जोड़ कर वृद्धि की गई। और अब पुराणों में ४ लाख श्लोक मिलते हैं। इस प्रकार पुराणों के स्वरूप के विषय में भी वही कहा जा सकता है कि वास्तव में १२००० श्लोकों वाले पुराण कौन-कौन से थे। भागवत के बारे में लिखा है —अष्टादशश्रीभागवतमिष्यते।

अर्थात् भागवत में १८००० श्लोक हैं। यह वर्तमान भागवत में गिनने पर केवल १४७८० श्लोक मिलते हैं। स्पष्ट है कि वर्तमान भागवत में से ३२२० श्लोक निकाल दिये गए हैं।

इसी प्रकार भिन्न २ स्थानों के छपे पुराणों में श्लोकों व अध्यायों में भारी अन्तर मिलता है। अतः पुराण साहित्य किसी भी रूप में सर्वान्श में मान्य नहीं हो सकता है। पुराणों के कारण वेदों के स्वाध्याय व प्रचार की भारी हानि हुई।

प्रथमं सर्व शास्त्राणां ब्रह्मणा स्मृतम्।
अनन्तरं तु वक्त्रेभ्यो वेदास्तभ्य, विनिर्गताः

—शिव पु० वायु सं० अ० १

सर्व शास्त्रों को बनाने में प्रथम से ब्रह्माजी ने पुराणों को बनाया था। उसके बाद वेद उनसे प्रकट हुए।

इससे पुराणकार ने वेदों को पुराणों के बाद दूसरे नम्बर पर डाल दिया है। यह स्पष्टतया वेद-निंदा है। पुराणों का मुख्य लक्ष्य ही वेदों की अवहेलना करना है। शिव पुराण ने तो हवन भी पुराण के श्लोको से

अर्थात्—भक्ति से छब्बीस पुराणों को जो पढ़ता व सुनता है वह मुक्त हो जाता है।

इससे प्रगट है कभी पुराण २६ भी थे। भविष्य पुराण में लिखा है—

सर्वाण्येव पुराणानि सज्ञेयानि नरर्षभ।
द्वादशैव सहस्राणि प्रोक्तानीह मनीषिभिः।१०३।
पुनर्वृद्धिंगतानीह आख्यानैर्विधैर्नृप ॥ १०४

—भविष्य पु० ब्राह्म पर्व अ० १

कभी सारे पुराणों में १२००० श्लोक मात्र थे। उनमें उपाख्यान जोड़-जोड़ कर वृद्धि की गई। और अब पुराणों में ४ लाख श्लोक मिलते हैं। इस प्रकार पुराणों के स्वरूप के विषय में भी वही कहा जा सकता है कि वास्तव में १२००० श्लोकों वाले पुराण कौन-कौन से थे। भागवत के बारे में लिखा है —अष्टादशश्रीभागवतमिष्यते।

अर्थात् भागवत में १८००० श्लोक हैं। यह वर्तमान भागवत में गिनने पर केवल १४७८० श्लोक मिलते हैं। स्पष्ट है कि वर्तमान भागवत में से ३२२० श्लोक निकाल दिये गए हैं।

इसी प्रकार भिन्न २ स्थानों के छपे पुराणों में श्लोकों व अध्यायों में भारी अन्तर मिलता है। अतः पुराण साहित्य किसी भी रूप में सर्वान्श में मान्य नहीं हो सकता है। पुराणों के कारण वेदों के स्वाध्याय व प्रचार की भारी हानि हुई।

प्रथमं सर्व शास्त्राणां ब्रह्मणा स्मृतम्।
अनन्तरं तु वक्त्रेभ्यो वेदास्तभ्य, विनिर्गता:

—शिव पु० वायु सं० अ० १

सर्व शास्त्रों को बनाने में प्रथम से ब्रह्माजी ने पुराणों को बनाया था। उसके बाद वेद उनसे प्रकट हुए।

इससे पुराणकार ने वेदों को पुराणों के बाद दूसरे नम्बर पर डाल दिया है। यह स्पष्टतया वेद-निंदा है। पुराणों का मुख्य लक्ष्य ही वेदों की अवहेलना करना है। शिव पुराण ने तो हवन भी पुराण के श्लोको से

ही करने की व्यवस्था दे दी है। स्वाध्याय में भी वेद का स्थान पुराणों ने लिया तो कर्म-काण्ड में भी वेदों का बहिष्कार पुराण करने लगे हैं।

मोक्ष की तो सोल एजेन्सी पुराणकारों के पास थी। पुराणों के पढ़ने-सुनने उनके अध्यायों या कथाओं के सुनने पढ़ने मात्र से मोक्ष मिलने की गारन्टी पुराणकारों ने करदी है। किसी भी पुराण को देखिये मोक्ष के सस्ते से सस्ते अनुभूत प्रयोग उसमें मिलेंगे। यज्ञ-तप-ब्रह्मचर्य-योग-स्वाध्याय वेदाध्ययन आदि सभी की आवश्यकता को पुराणों ने समाप्त कर दिया है। बड़े से बड़े पाप से मुक्ति केवल पुराणों के पाठ या उसके मान्य देवता की शक्ति से मिल जाने का उपदेश मय दृष्टान्तों के पुराणों में मिलेगा। इससे पुराणों ने समाज में सदाचार के स्थान पर दुराचार, वेदाध्ययन के स्थान पर पुराणों के पाठ, यज्ञ योग तप के स्थान पर नाम-स्मरण या गङ्गा स्नान तीर्थ यात्रा या व्रत रखना ईश्वर के स्थान पर देवता व अवतार रूपी मानव भक्ति तथा जड़ोपासना का विधान करके देश को उत्थान के बजाय पतन की ओर बढ़ाया है। मानव को नास्तिक बनाने में पुराणों का ही हाथ रहा है। भारत में धर्म के नाम पर सारा पाखंड पुराणों ने ही फैलाया है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इसलिए इनके बहिष्कार की व्यवस्था की है। विद्वानों को चाहिए कि इन पुराणों की वास्तविकता जनता के सामने रखें और उसे सचेत करके वेद व उपनिषदों के स्वाध्याय में प्रवृत्त करावें। तभी देश का कल्याण होगा और वैदिक धर्म के प्रचार का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

* शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका *

— तपोभूमि —

मासिक - पत्र अवश्य मँगाइये।

पता—सत्य प्रकाशन वृन्दावन मार्ग, मथुरा।

इस ट्रैक्ट का मूल्य ५ न० पै०।

मुद्रक व प्रकाशक—ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' वैदिक प्रेस, मथुरा।